शोषण की दर
(आईफ़ोन का उदाहरण)

ट्राईकॉन्टिनेंटल: सामाजिक शोध संस्थान
नोटबुक संख्या 2

शोषण की दर
(आईफ़ोन का उदाहरण)

ट्राईकॉन्टिनेंटल: सामाजिक शोध संस्थान
नोटबुक संख्या 2

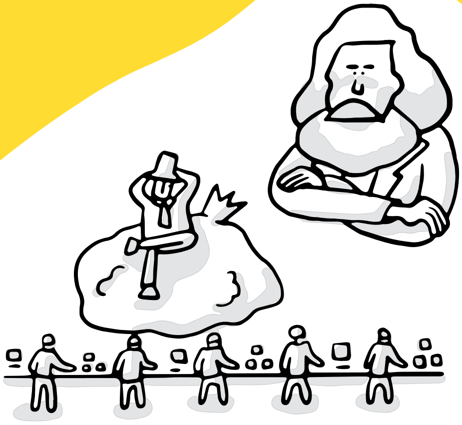

अपने दौर के अन्य संवेदनशील लोगों की तरह कार्ल मार्क्स (1818-1883) भी कारखाना मज़दूरों के काम के बेहद बुरे हालात और उनकी कामगार यूनियन से जुड़ी गतिविधियों को लेकर परेशान थे। यह ज़ाहिर था कि फ़ैक्टरी में काम करने वाले मज़दूर इतनी बचत नहीं कर पा रहे थे कि वो अपनी ज़िंदगियाँ बेहतर कर पाते। जबकि दूसरी ओर, फ़ैक्टरी मालिक दिन-ब-दिन अमीर होते चले जा रहे थे। मज़दूरों और मालिकों के बीच की ये असमानता समय के साथ बढ़ती चली गई।

कार्ल मार्क्स जिन हालातों के बारे में बात कर रहे थे वो आज भी मौजूद हैं। ऐपल जैसी कम्पनियां फल-फूल रही हैं जबकि ऐपल के सामान बनाने वाले चीनी कारखानों के मज़दूर मुश्किल हालातों में कम मज़दूरी पर काम करने को मज़बूर हैं। ये आँकड़े मज़दूरों की मज़दूरी को बढ़ाने की नितांत आवश्यकता को रेखांकित करते हैं। उनको एक दिन के उचित काम के बदले एक दिन की उचित मजदूरी दी जानी चाहिए। लेकिन मार्क्स ने इसको ' रूढ़िवादी आदर्श' कहा, क्योंकि उदारवादी लोगों के लिए ऐसा कहना तो आसान है, लेकिन पूंजीवादी व्यवस्था में इसे लागू करना असंभव है। बढ़ी हुई मज़दूरी जरूरी है, लेकिन इससे पूंजी की उत्पादन प्रक्रिया में मज़दूरों को निचोड़कर मुनाफ़ा

कमाने की ताकत घट जायेगी। बढ़ी हुई मज़दूरी मज़दूरों को उस गुलामी से आज़ाद नहीं करा सकती जिसके चलते वे ज़िन्दा रहने के लिए अपनी इंसानी काबिलियत को मज़दूरी के रूप में बेचने को मज़बूर हैं। ज़िंदा रहने के लिए ज़रूरी मज़दूरी की माँग सिर्फ़ वर्ग संघर्ष को बढ़ावा देगी। इसलिए इस संघर्ष का दूरगामी मक़सद बढ़ी हुई मज़दूरी नहीं, बल्कि मज़दूरी व्यवस्था का अंत होना चाहिए। मार्क्स ने अपनी पुस्तक ***मूल्य, कीमत और लाभ*** में लिखा है कि मज़दूरों को अपने बैनरों पर ये क्रान्तिकारी नारा लिख लेना चाहिए - 'मज़दूरी व्यवस्था का खात्मा!'।

ट्राईकॉन्टिनेंटल: सामाजिक शोध संस्थान की नोटबुक संख्या 2 में हम ऐपल के आईफ़ोन की हालिया उत्पादन प्रक्रिया का खाका खीचेंगे। हम ऐपल की उत्पादन प्रक्रिया के ज़रिये मुनाफ़े और शोषण की आन्तरिक कार्यप्रणाली का विश्लेषण करेंगे। हमारी दिलचस्पी सिर्फ़ ऐपल और आईफ़ोन तक सीमित नहीं है, बल्कि हम इन जैसे परिष्कृत इलेक्ट्रानिक उपकरणों की उत्पादन प्रक्रिया में होने वाले शोषण की दर का मार्क्सवादी विश्लेषण करना चाहते हैं।

हमारा विश्वास है कि **शोषण की दर** को मापने की विधि सीखने के लिए ऐसा करना जरूरी है, ताकि हम सटीक तरीके से जान पायें कि हर साल उत्पादित होने वाले सामाजिक धन में मज़दूरों का योगदान कितना होता है।

भाग 1: आईफ़ोन आपका स्वागत करता है

आईफ़ोन X का उत्पादन संयुक्त राज्य अमेरिका में होता तो क्या होता?

अगर आईफ़ोन X संयुक्त राज्य अमेरिका में बनता तो यह दुनिया की ज्यादातर आबादी की खरीदने की क्षमता से बाहर होता। एक अनुमान के अनुसार अगर आईफ़ोन X संयुक्त राज्य अमेरिका में बनता, तो उसकी कीमत कम से कम 30,000 डॉलर होती। [इस नोटबुक में दी गई डॉलर राशियों का तात्पर्य अमेरिकी डॉलर से है।]

आईफ़ोन X की कीमत (2019) संयुक्त राज्य अमेरिका में 900 डॉलर से लेकर ब्राज़ील और तुर्की में 1900 डॉलर के बीच है।

30,000 डॉलर की कीमत का आईफ़ोन लोगों की पहुँच से बिल्कुल बाहर होता। न्यूनतम मज़दूरी पाने वाले किसी भारतीय मज़दूर को एक आईफ़ोन खरीदने के लिए सोलह साल और छः महीने तक प्रतिदिन, काम करना होगा।

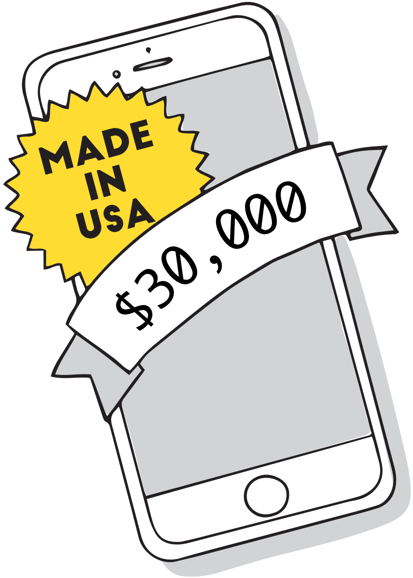

दक्षिण अफ्रीका में न्यूनतम मज़दूरी पाने वाले एक मज़दूर को एक आईफ़ोन खरीदने के लिए चौदह साल और छः महीने लगातार काम करना होगा।
मौजूदा समय में इस्तेमाल होने वाले तकरीबन सारे 7 करोड़ आईफ़ोनों के साथ-साथ 3 करोड़ आईपैड और ऐपल के अन्य 5.9 करोड़ उत्पाद भी संयुक्त राज्य अमेरिका से बाहर बने हुए हैं।

फरवरी 2011 में संयुक्त राज्य अमेरिका के राष्ट्रपति बराक ओबामा सिलिकॉन वैली के शीर्ष अधिकारियों, जिसमें स्टीव जॉब्स भी शामिल हैं, के साथ रात्रिभोज पर।

(जॉब्स ने ये नहीं बताया कि ऐपल वैश्विक पण्य श्रृंखला (Global Commodity Chain) के निम्न टैक्सों का फ़ायदा उठाती है। अगर ऐपल संयुक्त राज्य अमेरिका में आईफ़ोन बनाये तो उसको 35% टैक्स देना होगा। वैश्विक पण्य श्रृंखला की वजह से ऐपल को मात्र 2% टैक्स अदा करना होता है।)

आईफ़ोन को संयुक्त राज्य अमेरिका से बाहर बनाए जाने की कई वजहें हैं। सबसे पहली और जाहिर सी वजह है मज़दूरों को दी जाने वाली मज़दूरी। संयुक्त राज्य अमेरिका में मज़दूरी दुनिया के कई हिस्सों की तुलना में काफ़ी ज्यादा है। विशेषकर चीन की तुलना में, जहाँ इस तरह की ज्यादातर चीज़ें बनती हैं। दूसरा कारण ये है कि दुनिया के बहुत सारे हिस्सों में मज़दूरों के काम की परिस्थितियाँ बेहद खराब हैं। इन हिस्सों के निर्यात प्रसंस्करण क्षेत्रों (Export Processing Zones) में कामगार यूनियनें प्रतिबंधित हैं तथा सरकारी नियम-क़ानून न के बराबर हैं।

संसाधनों के दोहन और कार्यस्थलों पर मज़दूरों के अधिकारों को सुरक्षित रखने वाले सरकारी नियम-क़ानूनों की बंदिशें हटने की वजह से उत्पादन की प्रक्रिया के नकारात्मक परिणाम बढ़ते जा रहे हैं। जैसे कि खतरनाक

रसायनिक पदार्थों के विसर्जन और खनन कम्पनियों द्वारा पानी को प्रदूषित करने वाले खतरनाक रसायनों के प्रयोग के नतीजतन खेती का नाश हो रहा है। इन वजहों से करोड़ों किसान खेती छोड़कर औद्योगिक क्षेत्रों में मज़दूरी करने को मज़बूर हैं। इन बदलावों का मुख्य कारण वैश्विक पण्य श्रृंखला के तहत उत्पादन प्रक्रिया का अलग-अलग चरणों में बँटना (Disarticulated Production) है। इस नोटबुक में हम उत्पादन प्रक्रिया के अलग-अलग चरणों में बँटने और वैश्विक पण्य श्रृंखला के बारे में बात करेंगे।

वैश्विक पण्य श्रृंखला?

पहले कारखाने एक ही जगह पर लगाए जाते थे। जमीन को खरीदकर या उसको किराये पर लेकर उसपर कारखाने की ईमारत को बनवाया जाता था। कारखाने का पूंजीपति मालिक मशीनों को खरीदकर या किराये पर लेकर कारखाने की ईमारत के भीतर लगवाता था। मशीनों को चलाने और बिजली के दूसरे उपयोगों के लिए बिजली की व्यवस्था भी की गयी, जिसकी वजह से दिन में काम करने कि अवधि लम्बी होती चली गई और देर रात तक तीसरी पाली में मज़दूरों से काम कराना संभव हो पाया। बाज़ार में

बेची जाने वाली वस्तुओं को बनाने के लिए जरूरी कच्चे माल की खरीददारी होती थी। इसके बाद पूंजीपति पण्यों के उत्पादन हेतु एक निश्चित समय के लिए मज़दूरों को कारखाने के भीतर काम पर लगाता था। अच्छी मशीनों के आने के साथ-साथ मज़दूरों के बीच हुए काम के बँटवारे की वजह से कारखानों की उत्पादकता बढ़ती गई। लेकिन इन पुराने कारखानों की एक ख़ास बात ये थी कि वो एक ही जगह पर स्थित होते थे। कच्चे माल को भले ही अलग-अलग जगहों से मँगवाया जाता था। इसलिए उस वक़्त के कारखाने दुनिया के उन हिस्सों से जुड़े होते थे जिन जगहों से उनको कच्चा माल मँगवाना पड़ता था और जिन जगहों पर तैयार माल बेचना होता था।

1960 के दशक के मध्य-भाग तक आते-आते तीन तकनीकी और तीन बड़े राजनीतिक और आर्थिक बदलावों की मदद से कारखानों ने अपना बुनियादी ढाँचा बदला।

एक दूसरे से जुड़े हुए ये तीन तकनीकी बदलाव निम्नलिखित थे:

1. दूरसंचार नेटवर्क

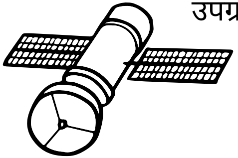

1960 के दशक के मध्य तक बहुत सारे उपग्रहों को वाणिज्यिक मकसद के साथ अंतरिक्ष में छोड़ा गया। इन उपग्रहों की मदद से दुनिया के अलग-अलग हिस्सों के बीच संपर्क स्थापित करना आसान हो गया।

2. कंप्यूटरीकरण

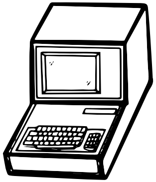

कंप्यूटर के आने से हिसाब-किताब रखना, कच्चे माल और तैयार माल से जुड़े आँकड़े सँभालना काफ़ी आसान हो गया। भारी-भरकम बही-खातों की जगह लेकर कम्प्यूटर ने ये सारे काम आसान कर दिए। अगर हाँग-काँग और कॅलिफॉर्निया जैसी दो सुदूर जगहों के कंप्यूटरों को उपग्रह-नेटवर्क से जोड़ दिया जाए, तो कॅलिफॉर्निया में स्थित व्यवसाय के मुख्यालय को तैयार माल में होने वाली कमी का तुरंत पता चल जाएगा और उसके अनुसार कच्चा माल ख़रीदकर उत्पादन बढ़ाया जा सकेगा।

3. सामानों के परिवहन और प्रबंधन की बेहतर व्यवस्था और मानकीकरण

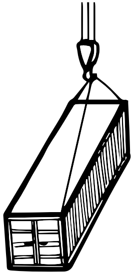

पहले एक समुद्री जहाज़ से सामान उतारने में मज़दूरों को कई दिन लग जाते थे। उतारकर किनारे पर मौजूद गोदामों में रखने के दौरान सामान इधर-उधर भी हो जाते थे। इसके अलावा ये मज़दूर भी कामगार यूनियनों की अगुवाई में मज़दूरी बढ़ाने और काम के हालातों में सुधार की माँग के साथ-साथ राजनीतिक मुद्दों को लेकर भी हड़ताल करते रहते थे। उनकी राजनीतिक एकता को तोड़ना ज़रूरी हो गया था। 1950 के दशक के मध्य तक, माल ढोने वाले समुद्री जहाज़ों ने ख़ास आकार वाले धातु के बने डिब्बों में सामान ढोना शुरू कर दिया। इन डिब्बों को क्रेन की मदद से समुद्री जहाज़ों से उठाकर ट्रकों या माल ढोने वाली ट्रेनों पर कुछ घंटों के भीतर ही लादा जा सकता था। इसकी वजह से काफ़ी कम समय में दुनिया

भर में सामानों को इधर से उधर पहुँचाना संभव हो पाया और इस बदलाव ने मज़दूरों की कामगार यूनियनों को कमजोर करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस बदलाव की वजह से परिवहन का खर्चा और हड़ताल होने का जोखिम, दोनों कम हो गए। सामानों के परिवहन और प्रबंधन में होने वाली क्रांति की ये सिर्फ़ शुरूआत भर थी। इसके बाद से बेहतर किस्म के परिवहन और प्रबंधन की व्यवस्थाओं के आने के बाद कम्पनियों को कच्चे माल और तैयार उत्पादों की निगरानी करना आसान हो गया है। इससे इनके खोने की संभावना कम हुई है और इनका तय जगह पर समय पर पहुँचना सुनिश्चित करना आसान हो गया है। ये सब मानकीकरण (जोकि अंतराष्ट्रीय मानकीकरण संगठन (International Organization for Standardization) की अगुवाई का नतीजा है) की वजह से हो पाया है। मानकीकरण की वजह से किसी भी उत्पाद को बनाने के लिए आवश्यक कच्चे माल को दुनिया के किसी भी हिस्से से मँगाया जा सकता है। एक ख़ास तरह के बिजली के तार या खास तरह के शीशे को अलग-अलग हिसाब से नहीं मापा जाएगा। अब इनका उत्पादन हर जगह एक सटीक मानक के अनुसार ही होगा। उत्पाद खरीदने वाली कम्पनी को इसकी मदद से उत्पादकों को प्रतिस्पर्धा की स्थिति में धकेलकर उत्पादों के दाम कम कराने में सफलता मिली। अगर मज़दूर एक जगह पर काम करने के हालातों में सुधार लाने में कामयाब रहते हैं तो मानकीकरण और सामानों के परिवहन और प्रबंधन में हुई बेहतरी का फ़ायदा उठाकर उत्पादन को किसी ऐसी जगह पर ले जाया जा सकता है जहाँ मज़दूर वर्ग ज़्यादा मज़बूत न हो।

इन तीन तकनीकी बदलावों ने कारखानों को अलग-अलग भागों में बाँटने के बारे में सोचने का अवसर दिया।

कारखाने का हर भाग या तो कच्चे माल के पास होता था या फिर उस जगह जहाँ पर सस्ते एवं कुशल मज़दूर मौजूद होते थे।

हालाँकि उत्पादन की प्रक्रिया महाद्वीपों के विभिन्न हिस्सों में फैल चुकी थी, लेकिन इसके बाद भी उत्पादन, परिवहन और तैयार माल की स्थिति के आँकड़ों के एकीकृत प्रबंधन की मदद से कम्पनियाँ उत्पादन की सारी प्रक्रियाओं को नियंत्रित कर रही थीं। सामानों के परिवहन और प्रबंधन की बेहतरी और परिवहन की विकसित तकनीकों ने कच्चे माल और उत्पादों को दुनिया के किसी भी हिस्से में तेज़ी से भेजना आसान कर दिया।

एक संधारित्र (Capacitor) को किसी एक जगह पर बनाया जा सकता है, फ़ोन की स्क्रीन को किसी और जगह पर, और इसी तरह अलग-अलग जगहों पर बने अन्य पुर्जों को तीसरी जगह पर मिलाकर एक आईफ़ोन बनाया जा सकता है।

उत्पादन की प्रक्रिया के अलग-अलग भागों में बँटने की वजह से तैयार उत्पादों को बनाने के लिए देशों के बीच कच्चे मालों की आवाजाही का पुराना तरीका मज़बूत हुआ है। इसने एक ऐसी व्यवस्था बनाई है जो मज़दूरों के अधिकारों और राष्ट्रीय विकास की योजनाओं को खोखला करती है। ये व्यवस्था वैश्विक पूंजी द्वारा किये जाने वाले शोषण को बढ़ावा देती है। इस व्यवस्था को हम **वैश्विक पण्य श्रृंखला** (इसको वैश्विक मूल्य श्रृंखला के नाम से भी जाना जाता है) के नाम से सम्बोधित करेंगे। वैश्विक पण्य श्रृंखला की खास बात ये है कि पण्यों के उत्पादन को (मार्केटिंग और वितरण को भी) अलग-अलग क्षेत्रों में स्थित कम्पनियों के बीच बाँट दिया जाता है। वैश्विक पण्य श्रृंखला के अस्तित्व में आने के बाद से कम्पनियों को ज़रूरत से ज़्यादा सामान अपने पास रखने की आवश्यकता नहीं रही।

वो अब बाज़ार की माँग के हिसाब से सामान मँगा सकती थीं। यहाँ मुख्य बात ये है कि ऐपल जैसी बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ ब्रांड के अलावा कुछ भी नहीं बनातीं।

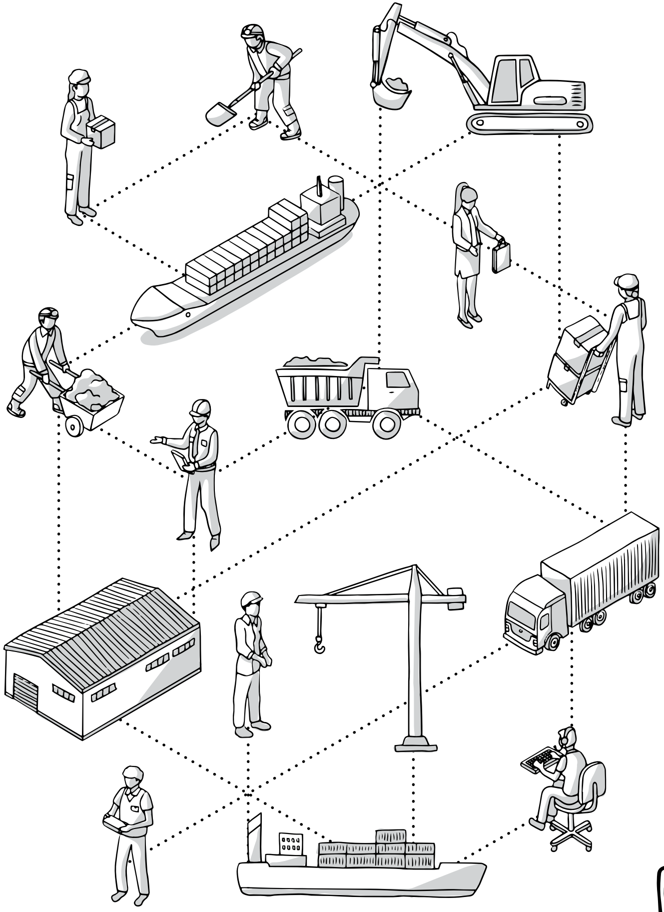

 इसके बावजूद भी सारी प्रक्रिया की लगाम इनके हाथों में होती है और कमाई का सबसे बड़ा हिस्सा भी इनके पास ही आता है।
(उत्पादन की प्रक्रिया के अलग-अलग चरणों में बँटने और वैश्विक पण्य श्रृंखला के बारे में विधिवत चर्चा के लिए हमारे Working Document#1: In the Ruins of the Present को पढ़ें।)

1970 के दशक में पूंजीवाद को संरचनात्मक संकट का सामना करना पड़ा। इस संकट ने वैश्विक पण्य श्रृंखला और बाज़ार की माँग के अनुसार माल मँगाने की प्रक्रिया को बढ़ावा दिया। आख़िरकार वैश्विक पूंजीवाद को इस तरह के संकट का सामना क्यों करना पड़ा जो लंबे समय तक टिका रहा और अभी तक मौजूद है?

हर पूंजीवादी कम्पनी अपना मुनाफ़ा बढ़ाते रहना चाहती है। उनका यही मकसद होता है। मुनाफ़ा बनाए रखने और बढ़ाते रहने के लिए इन कम्पनियों को बहुत सारी चीजें करनी पड़ती हैं:

1. ये नये उत्पाद बनाकर बाज़ार पर अपना आधिपत्य जमाने की कोशिश करती हैं। हालाँकि दूसरी कम्पनियाँ भी नकल करके इस बढ़त को जल्दी ही नाकाम कर देती हैं। उत्पादों के नयेपन पर और बाज़ार पर अपने एकाधिकार को बनाए रखने के लिए ये यथासंभव लंबे समय तक पेटेंट (Patent) का इस्तेमाल करती हैं।

2. बाज़ार में अपनी हिस्सेदारी बढ़ाने के लिए ये विज्ञापन और ब्रांड निर्माण के अलावा रिश्वतखोरी और जासूसी की मदद से एक दूसरे से मुकाबला करती हैं। अगर ब्रांड उपभोक्ताओं से भावनात्मक जुड़ाव बनाने में सफल रहता है तो दूसरी कम्पनियों द्वारा ठीक वैसा ही उत्पाद बनाए जाने के बावजूद वो ब्रांड बाज़ार में अपना दबदबा बनाए रख सकता है। डिजाईनों की चोरी और खुदरा विक्रेताओं को पैसे देकर भी दूसरी कम्पनियों पर बढ़त बनाई जाती है।

3. कम्पनियाँ श्रम की उत्पादकता को बढ़ाने के लिए उत्पादन और मज़दूरों के प्रबंधन की नई तकनीक का प्रयोग करती हैं। **श्रम की उत्पादकता** का मतलब ये

है कि पहले से ज़्यादा उत्पाद बनाने के लिए कम्पनियाँ मज़दूरों से तय समय में ही ज़्यादा काम कराएँगी। अगर नई तकनीक या प्रबंधन की मदद से मज़दूरों को पहले जितनी ही मज़दूरी देकर ज़्यादा मज़दूरी कराई जाए तो कम्पनी की उत्पादकता ज़्यादा होगी। इसे दूसरे शब्दों मे कहा जाए तो जितने घंटे पहले मज़दूरी कराई जाती थी, उतने ही घंटे मज़दूरी कराकर कम्पनियाँ ज़्यादा मुनाफ़ा कमाती हैं।

कम्पनियों के बीच होने वाले इस मुकाबले में सबसे असरदार हथियार होता है मशीनीकरण करके उत्पादन की लागत को घटाना। लेकिन बाज़ार में अपनी हिस्सेदारी बढ़ाने और मज़दूरों के काम की उत्पादकता को बढ़ाने के लिए कम्पनियों को मशीनों और तकनीक के साथ-साथ विज्ञापन और ब्रांड के प्रबंधन में भी पैसा लगाना ज़रूरी होता है। मार्क्सवादी शब्दावली में कहें तो, कम्पनियों को एक उत्पाद को बनाने में आने वाली लागत को कम करके मुकाबले में बने रहने के लिए पूंजी-श्रम के अनुपात को बढ़ाना पड़ता है।

मार्क्स ने सुझाव दिया है कि इस बदलाव का विश्लेषण करने के लिए पूंजी-श्रम अनुपात (पूंजी की मूल्य संरचना) की समीक्षा की जानी चाहिए।

पूंजी की मूल्य संरचना को बढ़ाने के लिए पूंजीपति को परिवर्ती पूंजी(मज़दूरों को दी जाने वाली मज़दूरी पर आने वाली लागत) की बजाय स्थिर पूंजी में ज़्यादा पैसा लगाना होगा।

स्थिर पूंजी में अचल पूंजी (मशीनें इत्यादि) और चल पूंजी (कच्चे माल इत्यादि), दोनों शामिल हैं।

पूंजी की मूल्य संरचना ने मार्क्स के लिए **स्थिर पूंजी** (Constant Capital) और **परिवर्ती पूंजी** (Variable Capital) के बीच के संबंध को तय करना संभव बनाया। कारखाना, औजार और सामानों में होने वाले निवेश को स्थिर पूंजी कहते हैं। श्रम शक्ति में होने वाले निवेश को परिवर्ती पूंजी के नाम से जानते हैं। इस संबंध का उपयोग करके ही मार्क्स श्रम की उत्पादकता और बेशी मूल्य (Surplus Value) का वर्णन कर पाए। कम्पनियों द्वारा स्थिर पूंजी में बड़ी मात्रा में निवेश करने से पूंजी की मूल्य संरचना बढ़ी। इससे अर्थव्यवस्थाओं को लंबे समय में मिलने वाले मुनाफ़े में गिरावट आई। उदाहरण के लिए, संयुक्त राज्य अमेरिका में 1947-1985 के दौरान पूंजी की मूल्य संरचना 103% बढ़ी, जबकि मुनाफ़े की दर 53% घटी। पूंजीवाद में निहित और लगातार उसके अस्तित्व को चुनौती देने वाले मुनाफ़े के इस संकट ने निवेशकों को अपने

उत्पादन सम्बंधी कामों को दुनिया के उन हिस्सों, खासकर दक्षिणी हिस्सों, में स्थानांतरित करने पर मजबूर किया जहाँ श्रम पर आने वाली लागत कम थी।

1980 के दशक में आए तीन बड़े राजनीतिक बदलावों के बिना उत्पादन का दुनिया के दक्षिणी हिस्सों में जाना संभव नहीं होता:

1. **सोवियत संघ और पूर्वी यूरोप के समाजवादी गुट का पतन**

   सोवियत संघ और पूर्वी यूरोप के समाजवादी गुट के पतन से बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के दुनिया भर में फैलने की राह का रोड़ा हट गया। सोवियत संघ ने तीसरी दुनिया के गुट को वैश्विक मंच पर अपनी भूमिका स्थापित करने की ताक़त दी थी। तीसरी दुनिया के गुट ने इसका उपयोग ढाल की तरह करके एक स्वायत्त व्यापार और विकास नीति वाले एक नए अंतराष्ट्रीय आर्थिक क्रम (New International Economic Order, NIEO) की वकालत की थी। इस समाजवादी ढाल के ख़ात्मे का नतीजा ये हुआ कि तीसरी दुनिया के गुट की स्वायत्तता की माँग करने की क्षमता भी जाती रही।

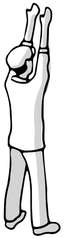

2. **तीसरी दुनिया का कर्ज़-संकट और चीन का अंतराष्ट्रीय व्यापार के लिए खुलना**

   सदियों के उपनिवेशवाद से पीड़ित आज़ाद राज्यों के लिए, जिसमें चीन भी शामिल था, राष्ट्रीय स्वायत्तता और राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था का निर्माण महत्वपूर्ण मुद्दे थे। लेकिन 1970 और 1980 के दशक के कर्ज़-संकट ने इनको अपनी आज़ादी को वैश्विक व्यापार के अधीन करने पर मज़बूर कर दिया। ये नया वैश्विक व्यापार बौद्धिक संपदा क़ानून और विश्व व्यापार संगठन (World Trade Organization) के इर्द-गिर्द केंद्रित था। नया वैश्विक व्यापार स्थानीय कारखानों की अनदेखी करके बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के हितों और एक वैश्विक कारख़ाने की परिकल्पना की हिमायत करता था। 1978 में शुरू होने वाले चीन के बाज़ार सुधार के दौर ने वैश्विक पण्य श्रृंखला को ख़ास रूप से बढ़ावा दिया। 1978 के बाद के समय से चीन में समुद्री किनारे के पास बड़ी संख्या में मौजूद अलग-अलग भागों में बँटे उत्पादन-प्रक्रिया में काम करने के लिए सैकड़ों लाख मज़दूर उपलब्ध थे।

3. उत्तरी अमेरिका, यूरोप और जापान में सरकारी नीतियों का जनता की ज़रूरतों से अलगाव

उत्तरी अमेरिका, यूरोप और जापान- इन तीनों देशों की सरकारों ने नयी नीतियाँ बनाईं जिससे इन देशों की कम्पनियों का विदेश जाना संभव हो पाया। इससे वित्त (Finance) को एक देश से दूसरे देश में आने-जाने की पूरी आज़ादी मिल गयी। राष्ट्रीय विकास परियोजना और राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था के निर्माण के लिए ज़रूरी सीमा-शुल्क (Tariff) और सब्सिडी की नीतियों को, जो उपनिवेशवाद से आज़ाद नये राज्यों और तीसरी दुनिया की परियोजना का ज़रूरी हिस्सा थीं, दरकिनार कर दिया गया। नवउदारवाद पर आधारित नई नीतियों ने कम्पनियों के लिए पुराने स्थानीय कारखानों की जगह महाद्वीपों के दरम्यान फैले कारखानों को बनाना संभव बनाया। इससे एक उत्पाद के अलग-अलग हिस्से विभिन्न समय-क्षेत्रों में बनने लगे।

वैश्विक पण्य श्रृंखला में आईफ़ोन

वैश्विक पण्य श्रृंखला के बिना आईफ़ोन बन नहीं पाते। आईफ़ोन को बनाने वाले कच्चे माल और उसके पुर्ज़े तकरीबन तीस देशों से मंगाए जाते हैं। आईफ़ोन बनाने के लिए दो तरह के सामानों का प्रयोग होता है:

1. **कच्चा माल**

2. **विनिर्मित पुर्ज़े**

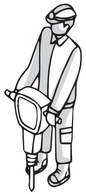

इनके अलावा आईफ़ोन बनाने में **बौद्धिक संपदा** का भी उपयोग होता है। बौद्धिक संपदा कच्चे माल और विनिर्मित पुर्ज़ों से अलग होती है। ये राज्य द्वारा दिया हुआ क़ानूनी अधिकार मात्र है जिसके आधार पर किराया वसूला जाता है। ख़ास कम्पनियों को ही राज्य द्वारा दवाइयों या इलेक्ट्रॉनिक उत्पादों पर बौद्धिक संपदा का अधिकार मिलता है और इस एकाधिकार का प्रयोग करके वो दूसरी कम्पनियों को इनका उपयोग करने से रोक सकती हैं या फिर इनके इस्तेमाल के लिए उनसे किराया वसूल सकती हैं। हम ये मान सकते हैं कि ऐपल ने तकनीकें ईज़ाद की और इसलिए उसे इन फ़ोनों को बेचकर बौद्धिक संपदा के

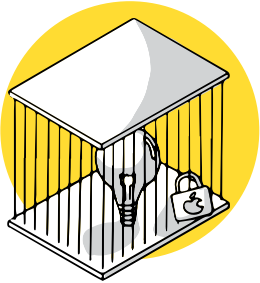

आधार पर किराया वसूलने का अधिकार है।
लेकिन, इंटरनेट, जीपीएस सिस्टम (GPS System), टच स्क्रीन, आवाज़ से सक्रिय होने वाले सहायक (Siri) जैसी आईफ़ोन को बनाने वाली लगभग सारी तकनीकों का निर्माण विश्वविद्यालयों और प्रयोगशालाओं में जनता के पैसे से हुआ है। यानी कि, ऐपल ने सरकार द्वारा बनाई गई तकनीकों का उपयोग करके आईफ़ोन बनाया। ऐपल जैसी निजी कम्पनियों को राज्य ने इन तकनीकों के बौद्धिक संपदा के अधिकार पर अपना दावा ठोंकने दिया। जनता के पैसे से हासिल की गई इन नई खोजों से मिला मुनाफ़ा निजी हाथों में गया, और अभी भी जा रहा है। आईफ़ोन के पुर्जों को बनाने और उनको मिलाकर आईफ़ोन का निर्माण करने वाली फॉक्सकॅन जैसी कम्पनियाँ बौद्धिक संपदा के अधिकार से हासिल सुरक्षा, और ऐपल के बनाए हुए शक्तिशाली ब्रांड की वजह से ऐपल को बाज़ार से हटा नहीं सकतीं।
और चूँकि ऐपल ने इन तकनीकों को बनाया ही नहीं, तो जाहिर सा सवाल उठता है: जनता के पैसों से खोजी गई तकनीकों का फ़ायदा किसे मिलना चाहिए?

आईफ़ोन को बनाने में लगने वाले **कच्चे माल** में निम्नलिखित चीजों का इस्तेमाल होता है:

- अल्यूमिनियम
- आर्सेनिक
- कार्बन
- कोबॉल्ट
- कोल्टन (निलोबियम और टैंटेलम)
- ताँबा
- गैलियम
- सोना
- लोहा
- प्लॅटिनम
- सिलिकन
- टिन

ये कच्चे माल कांगो लोकतांत्रिक गणराज्य और बोलीविया जैसी अनेक जगहों से आते हैं। संयुक्त राष्ट्र बाल कोष (UNICEF) और एमनेस्टी इंटरनेशनल (Amnesty International) जैसी कई जानी-मानी एजेन्सीयों की रिपोर्टों ने खुलासा किया है कि आईफ़ोन के उत्पादक इन खनिजों को खदानों से निकालने

के लिए बच्चों से मज़दूरी कराते हैं और खदान में काम करने वालों को इतनी कम मज़दूरी देते हैं कि उनको भूखों पेट रहना पड़ता है। एमनेस्टी इंटरनेशनल की रिपोर्ट बताती है कि कांगो लोकतांत्रिक गणराज्य में खनिज निकालने के लिए 40,000 बच्चों से बहुत ही ख़तरनाक हालातों में खदानों में काम कराया जाता है। वहाँ मौत, अंग-भंग, स्वास्थ्य समस्याएँ आम हैं। $1 से $2 प्रतिदिन की मज़दूरी पर काम करने वाले ये बच्चे गहरी खदानों में भारी बोझ ढोते हैं और एक दिन में बारह घंटे काम करते हैं। बाल-मज़दूरी जबरन कराई जाने वाली मज़दूरी है। खनन कराने वाली कम्पनियों को ये अच्छी तरह से पता होता है कि इन दुर्लभ खनिजों और ज़रूरी कच्चे माल को निकालने की लागत इसलिए काफ़ी कम है क्योंकि हथियारबंद लड़ाकों के समूह बंदूक की नोंक पर मज़दूरों से काम कराते हैं। मध्य अफ्रीका में ये आम बात है।

मज़दूरों को अनुशासित करने के ये तरीके आईफ़ोन बनाने के लिए ज़रूरी चीज़ें और खनिज-पदार्थ लाते हैं।
इसके बावजूद भी इनके साथ वैश्विक पण्य श्रृंखला के सबसे गैर-ज़रूरी हिस्से की तरह बर्ताव किया जाता है।

आईफ़ोन के कच्चे मालों में आपको निम्नलिखित चीजें मिलेंगी:

ऐपल के आपूर्तिकर्ताओं की आचार संहिता (इसको नियमित पौर पर दुरुस्त किया जाता है, हाल ही में इसे 2019 में दुरुस्त किया गया था) स्पष्ट रूप से कहती है:

इन फ़ोनों के ख़रीददारों की कल्पनाओं से ये जगहें इतनी दूर बसी हैं कि ऐपल और कच्चा माल मँगाने वाले उप-ठेकेदारों को इन बातों से कोई ख़ास फ़र्क नहीं पड़ता।
यूरोप से लेकर चीन तक कच्चा माल करीब तीस देशों के कारखानों में जाता है। आईफ़ोन के बहुत सारे पुर्ज़े चीनी कारखानों में बनते हैं। पुर्ज़े बनानेवालों की विविधतता की झलक पाने के लिए आईफ़ोन 5 और आईफ़ोन 6 के पुर्जों को बनाकर भेजने वाली जगहों को देखिए:

- एक्सीलरोमीटर (Accelerometer): जर्मनी की बॉश। संयुक्त राज्य अमेरिका की इन्वेन सेंस।
- ऑडियो चिपसेट और कोडेक़: संयुक्त राज्य अमेरिका में सिर्रस लॉजिक। (बनाने के लिए आउटसोर्सिंग का उपयोग होता है।)
बेसबैंड प्रोसेसर: संयुक्त राज्य अमेरिका में क्वालकॉम। (बनाने के लिए आउटसोर्सिंग का उपयोग होता है।)
- बैट्रियाँ: दक्षिण कोरीया में सैमसंग। चीन में हेज़ौ देसे बैट्री।
- कैमरे: जापान में सोनी. संयुक्त राज्य अमेरिका में ऑम्नीविजन सामने की ओर वाले फेसटाईम कैमरे की चिप बनाने का ठेका ताईवान की TSMC को देती है।
- चिपसेट और प्रोसेसर: दक्षिण कोरीया में सैमसंग और ताईवान में TSMC। इसके साथ-साथ इनकी साथी कम्पनी ग्लोबलफ़ाउण्ड्रीस अमेरिका में ही उत्पादन करती है।
- नियंत्रक चिप: संयुक्त राज्य अमेरिका में PMC सियेरा और ब्रॉडकॉम। (बनाने के लिए आउटसोर्सिंग का उपयोग होता है।)
- डिसप्ले (Display): जापान में जापान डिसप्ले और शार्प। दक्षिण कोरीया में LG डिसप्ले।
- DRAM: ताइवान में TSMC। दक्षिण कोरीया में हीनिक्स।
- ईकम्पास: जापान में आल्प्स इलेक्ट्रिक।
- अँगुली-चिन्ह के सेन्सर का प्रमाणीकरण: चीन में औथेंटेक बनाती है लेकिन उत्पादन के लिए ताईवान में

maxim integrated
Texas Instruments
SKYWORKS
GT Advanced Technologies
GLOBALFOUNDRIES
OmniVision
FAIRCHILD SEMICONDUCTOR
QUALCOMM
qorvo
CORNING
Avago TECHNOLOGIES
TriQuint SEMICONDUCTOR
BROADCOM
PMC
InvenSense
CIRRUS LOGIC
NXP
BOSCH
ST
ST
PEGATRON
DESAY
AuthenTec
FOXCONN
SAMSUNG
LG
SK hynix
Avago TECHNOLOGIES
XinTec
RF MICRO-DEVICES
tsmc
win
Leading Global Communications SEMICONDUCTORS
Hi-P International Limited
JABIL
TOSHIBA
JDI Japan Display Inc.
Perfecting the Art of Electronics ALPS
TDK
SONY
SHARP

आउटसोर्सिंग करती है।

- फ़्लैश मेमोरी: जापान में तोशिबा एर दक्षिण कोरीया में सैमसंग।
- जाइरोस्कोप: फ्रांस और इटली में STमाइक्रोइलेक्ट्रॉनिक्स।
- इंडक्टर कॉइल (ऑडियो): जापान में TDK।
- मुख्य चेसिस असेंब्ली: चीन में फॉक्सकॉन और पेगाट्रॉन।
- मिश्रित-सिग्नल चिप(जैसेकि NFC): नीदरलैंड में NXP।
- प्लास्टिक का निर्माण (आईफ़ोन 5 सी के लिए): सिंगपुर में Hi-P और ग्रीन पॉइंट-जबिल।
- रेडियो फ्रीक्वेन्सी मॉड्यूल: ताईवान में विन सेमीकंडक्टर्स (मॉड्यूल मैन्युफ़ैक्चरर्स आवागो और RF माइक्रो डिवाइसेस)। संयुक्त राज्य अमेरिका में आवागो टेक्नॉलॉजीस और ट्रीक्विंट सेमीकंडक्टर्स। संयुक्त राज्य अमेरिका में LTE कनेक्टिविटी के लिए क्वालकॉम।
- स्क्रीन और शीशा (डिसप्ले के लिए): संयुक्त राज्य अमेरिका में कॉर्निंग (गोरिल्ला ग्लास)। स्क्रीनों में लगने वाले नीलम के क्रिस्टालों को GT अड्वान्स्ड टेक्नोलॉजीस बनाती है।
- अर्धचालक: संयुक्त राज्य अमेरिका में टेक्सस इन्स्ट्रुमेंट्स, फेयरचाइल्ड और मैक्सिम मिलकर बनाते हैं।
- टच आईडी सेन्सर: ताईवान में TSMC और ज़िनटेक।
- टच स्क्रीन कंट्रोलर: संयुक्त राज्य अमेरिका में ब्रॉडकॉन। (बनाने के लिए आउटसोर्सिंग का उपयोग होता है।)
- ट्रांसमीटर और ऐम्पलीफ़िकेशन मॉड्यूल: संयुक्त राज्य अमेरिका में स्काईवर्क्स और कोरवो। (बनाने के लिए आउटसोर्सिंग का सहारा लिया जाता है।)

इन सारी चीज़ों को बनाने वाली कम्पनियों में ताईवान की फॉक्सकॉन (हॉन हाई प्रीसिजन इंडस्ट्री) सबसे महत्वपूर्ण है। साल 2017 में इसे $160 बिलियन की आय हुई थी। चीन में रोज़गार प्रदान करने वाली ये निजी क्षेत्र की सबसे बड़ी कम्पनी है, जहाँ इसने 13 लाख लोगों को काम पर लगा रखा है। पूरी दुनिया के स्तर पर देखा जाए तो सिर्फ़ वालमार्ट और मैकडोनल्ड ने ही इससे ज़्यादा लोगों को रोज़गार दे रखा है।

इन कारखानों में अनहोनियाँ होती रहती हैं। चीन के शेनज़ेंग शहर में काम करने के खराब हालातों और कम मज़दूरी के खिलाफ हुई मज़दूरों की सिलसिलेवार मौतों को 'फॉक्सकॉन की आत्महत्याओं' के नाम से जाना गया। चीनी मीडिया ने इसे 'आत्महत्या एक्सप्रेस' का नाम दिया। दो चीनी विद्वानों (पुन गाई और जेन्नी चान, 2012) ने फॉक्सकॉन की इन घटनाओं का अध्ययन किया। उनकी रिपोर्ट ने पुर्ज़े जोड़कर मोबाइल फोन बनाने वाले कारखाने के मज़दूरों की बातों को लिखा है। उनमें से कुछ वाकये:

हमारे ऊपर हर वक़्त चिल्लाया जाता है। यहाँ काम करना बहुत मुश्किल है। फॉक्सकॉन में काम करने के लिए हमें हर तरह के आदेश को हर हाल में मानना पड़ता है। ऐसा लगता है मानो हमें मज़दूरी कराने वाले किसी कैंप में बंदी बना दिया गया है।
क्या उत्पादन को बेहतर बनाने के लिए हम अपनी मानवीय गरिमा की कुर्बानी दे दें?

इस मज़दूर के काम के सिर्फ़ दस सेकेंडों का ब्यौरा इस बात पर प्रकाश डालता है कि काम कितनी तेज गति से होता है:

मैं लाईन से मदरबोर्ड को उठाता हूँ, लोगो को स्कैन करता हूँ, बिजली के एंटीस्टैटिक थैले में डालता हूँ, लेबल चिपकाता हूँ और फिर लाईन पर रख देता हूँ। इन सारे कामों को करने में दो सेकेंड लगते हैं। हर दस सेकेंड में मैं इन कामों को पाँच दफ़े करता हूँ।

एक मज़दूर ने ब्रायन मर्चेंट (2017) को बताया कि रोज़ाना उसके हाथों से होकर 1700 आईफ़ोन गुज़रते हैं। उसका काम फ़ोन के डिस्प्ले पर एक ख़ास तरह की पॉलिश को लगाकर चमकाना था। वो 3 स्क्रीन प्रति मिनट के हिसाब से बारह घंटे तक रोजाना यही काम करती है। एक फ़ोन में चिप कवर और पीछे के कवर लगाने जैसे काम सिर्फ़ कुछ ही मिनट लेते हैं। मज़दूरों पर काम का दबाव बहुत ही ज़्यादा होता है।

साल 2010 से लेकर 2012 तक स्टीव जॉब्स लगातार ये दावे करते रहे कि ऐपल को 'फॉक्सकॉन की आत्महत्याओं' के बारे में पता था और वहाँ स्थिति नियंत्रण में थी। वो लागातार इस बात की घोषणा करते रहे कि ये सारी चीज़ें ख़त्म हो चुकी हैं।

लेकिन, ये समस्या ख़त्म नहीं हुई है। इसे केवल आत्महत्या की घटनाओं से ही नहीं मापा जा सकता। कम मज़दूरी और काम करने के खराब हालातों के अलावा रोज की ज़लालत मज़दूरों की ज़िंदगी का हिस्सा है। कई बार ऐसा हुआ कि तकरीबन 150 मज़दूर एक ईमारत की छत पर चढ़कर कूदने की धमकी देने लगे। वार्ताओं के दौरान उन्होने 'फॉक्सकॉन की आत्महत्याएँ' वाक्यांश का प्रयोग एक कूटनीति के तहत किया। आईफ़ोन के उत्पादन की प्रक्रिया में ये घटनाएँ आम हैं।

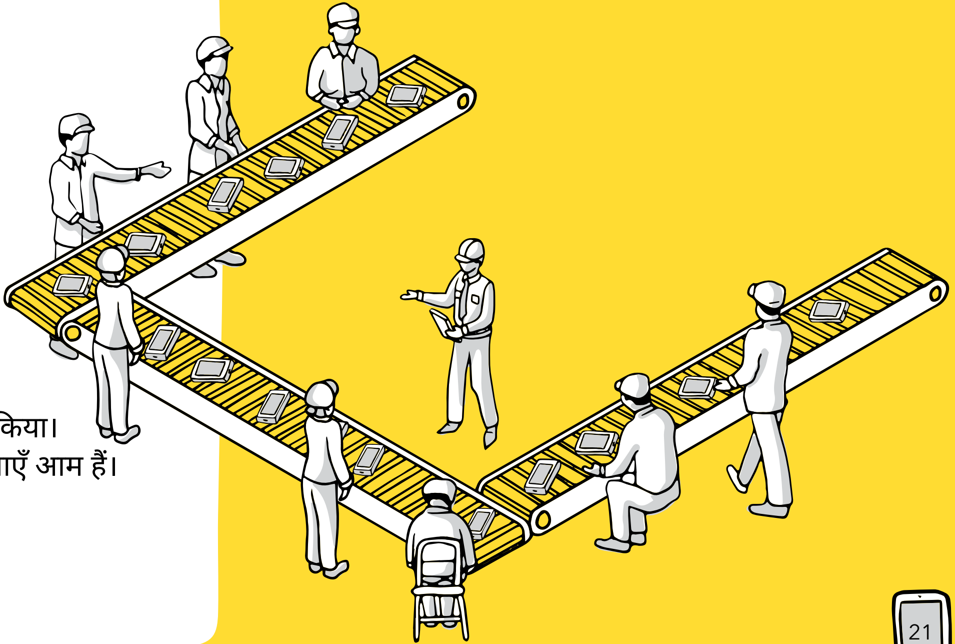

भाग 2. आईफ़ोन का मार्क्सवादी विश्लेषण

अभी तक आपने जो पढ़ा, अगर आप उससे आक्रोशित हुए तो आप खुद को एक इंसान मान सकते हैं।
आईफ़ोन बनाने के दौरान मज़दूरों को जिस तरह के खराब हालातों में काम करने पर मज़बूर होना पड़ता है उनको किसी भी
इंसान को हल्के में नहीं लेना चाहिए, चाहे वो दक्षिण अमेरिका की खदाने हों या पूर्वी एशिया के कारखाने।

लेकिन इस नोटबुक में हम सिर्फ़ आक्रोश तक सीमित नहीं होना चाहते। हम एक पण्य - आईफ़ोन- की उत्पादन प्रक्रिया को मार्क्सवादी नज़रिये से देखना चाहते हैं।
हमारी दिलचस्पी सिर्फ़ ऐपल और फॉक्सकॉन पर गुस्सा होने में
नहीं है। हमारी दिलचस्पी यह मापने में है कि इस वस्तु के उत्पादन के दौरान मज़दूरों का कितना शोषण होता है।
दूसरे शब्दों में कहें तो हम **शोषण की दर** को मापना चाहते हैं।

मार्क्स के सिद्धांत में शोषण की दर सबसे महत्वपूर्ण विचारों में से एक है। ये मापदंड हमें ये देखने में मदद करता है
कि उत्पादन कि प्रक्रिया में हुए मूल्य के इज़ाफ़े में मज़दूरों का योगदान कितना है। ये हमें दिखाता है कि मशीनीकरण के जादू या उत्पादन के बेहतर प्रबंधन की वजह से मज़दूरों को ज़्यादा मज़दूरी मिलने के बावजूद भी शोषण की दर बढ़ती ही है।
ये दर पूंजीपतियों और मज़दूरों के परस्पर विरोधी हितों को मात्रात्मक रूप में अभिव्यक्त करती है। शोषण की दर के इस विश्लेषण में एक परिवर्तनगामी राजनीति निहित है। ये मज़दूरों को यह देखने के योग्य बनाती है कि उनसे उत्पादित मूल्य का कितना हिस्सा पूंजीपतियों द्वारा छीना गया है, और इसके आधार पर वो उत्पादन करने की दूसरी व्यवस्था लाकर इस शोषण के ख़ात्मे की कवायद कर सकते हैं।

शोषण की दर को समझने के लिए पहले ये समझना ज़रूरी है कि मार्क्सवादी विचारधारा के अहम शब्दों, पण्य(Commodity) और मूल्य(Value) का मतलब मार्क्स के अनुसार क्या था।

पण्य क्या है? मार्क्स अपनी बहुचर्चित किताब कैपिटल (1867) की शुरूआत पण्य की चर्चा के साथ करते हैं।

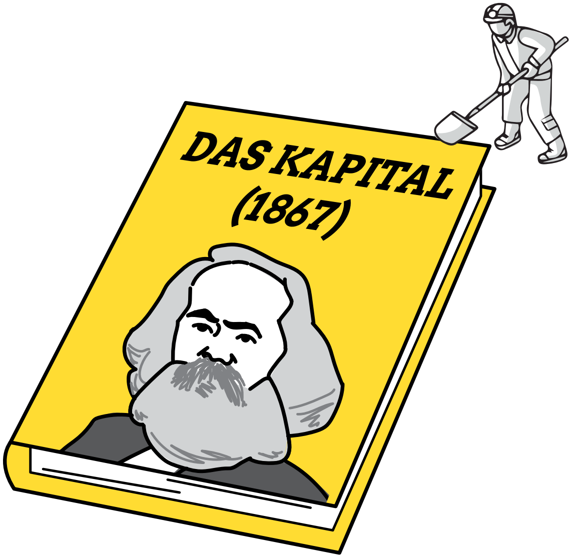

मार्क्स लिखते हैं कि 'एक पण्य हमसे बाहर मौजूद चीज़ होती है, जो अपने गुणों की वजह से अलग-अलग इंसानी ज़रूरतों को पूरा करती है। ये ज़रूरतें भूख से जुड़ी हो सकती हैं या फिर हमारी कल्पना से भी निकली हुई हो सकती हैं। हमें इससे मतलब नहीं है कि ये ज़रूरतों को किस तरीके से पूरा करती हैं। वो इंसान के ज़िंदा रहने में सीधे तौर पर मदद कर सकती हैं या दूसरे उत्पादों के उत्पादन में काम आ सकती हैं।' पण्य एक उपयोगी चीज़ होती है। लेकिन ये सिर्फ़ इंसानी ज़रूरतों को पूरा करने के लिहाज से ही उपयोगी नहीं है। ये ऐसी चीज़ है जिसको बेचा जा सकता है। इसका मालिक इसको बेचकर मुनाफ़ा कमा सकता है। पण्य में **मूल्य**(Value) और **उपयोग मूल्य**(Use Value), दोनों ही निहित होते हैं।

एक पण्य का उपयोग मूल्य उपभोक्ता के काम आने वाली उस पण्य की उपयोगिता ही है। एक आईफ़ोन इसका अच्छा उदाहरण है क्योंकि इसका इस्तेमाल कई कामों के लिए हो सकता है। जैसे कि फोन कॉल के लिए, वीडियो देखने के लिए, असहज महसूस करने की स्थिति में इसको पकड़कर अपने पास रखने के लिए (अपनी छवि बेहतर बनाने के लिए भी)।

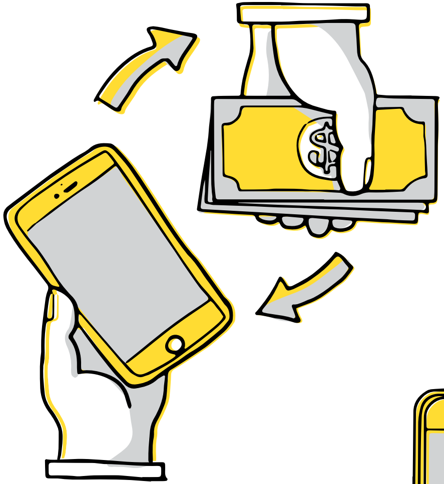

विनिमय मूल्य (Exchange Value)

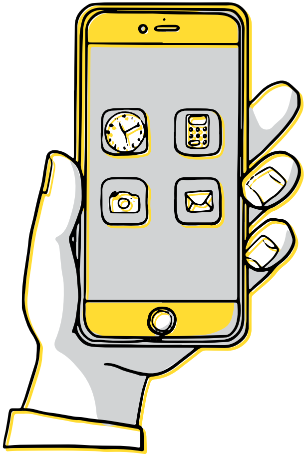

उपयोग मूल्य (Use Value)

एक पण्य की कीमत उसके मूल्य(विनिमय मूल्य) को दर्शाती है। एक पण्य के मूल्य और कीमत के बीच के संबंध को लेकर मार्क्सवादियों के बीच की लंबी और समृद्ध बहस मौजूद है। यह बहस उत्पादन प्रक्रिया में मूल्यों के कीमतों में बदलने की प्रक्रिया पर केंद्रित है। हालाँकि इस तरह की ग़ूढ़ बहस में पड़े बिना भी हम आईफ़ोन के उदाहरण का विश्लेषण कर सकते हैं। उदाहरण के तौर पर आईफ़ोन का मूल्य $999 है। ये मूल्य बाज़ार तय करता है। लेकिन कुल मूल्य भी बहुत सारे मूल्यों को मिलाकर बना है जिनको तीन हिस्सों में बाँटा जा सकता है: **स्थिर पूंजी**(Constant capital), **परिवर्ती पूंजी**(Variable capital), और **बेशी मूल्य**(Surplus value)।
ये मार्क्सवादी विश्लेषण के महत्वपूर्ण सिद्धांत हैं।

स्थिर पूंजी

कारखानों में बहुत तरह के कच्चे माल को लाकर श्रम और मशीनों के प्रयोग से उनको पण्यों में बदला जाता है।
कच्चे माल और उत्पादन के दौरान काम आने वाले दूसरे तरह के सामानों जिनमें मज़दूरों के औजार (मशीनें, उपकरण इत्यादि) शामिल हैं- को भी प्रकृति में उपलब्ध चीज़ों से ही बनाया जाता है। सही मायनों में ये कच्चे माल, 'कच्चे' नहीं हैं बल्कि उनके भीतर श्रम समाहित है।
अलग-अलग कच्चे माल और मज़दूरी के औजारों का मूल्य उनके भीतर मौजूद श्रम की मात्रा के अनुसार निर्धारित होता है। उत्पादन की प्रक्रिया में मूल्य की इस निर्धारित मात्रा का तबादला नये उत्पादित पण्यों में हो जाता है।
ये मूल्य अब नये पण्यों में शामिल हो जाता है। कार्ल मार्क्स कच्चे माल और मज़दूरी के औजारों के मूल्यों को ही **स्थिर पूंजी** कहते हैं।

आईफ़ोन की स्थिर पूंजी में उत्पादन में लगने वाले सभी खनिज पदार्थों और धातुओं के अलावा उत्पादन प्रक्रिया में काम करनी वाली मशीनों का अवमूल्यन भी शामिल है। ये सब मिलकर सामूहिक रूप से आईफ़ोन का निर्माण करते हैं। इस दौरान खनिज पदार्थों, धातुओं और मशीनों के मूल्य में कोई बदलाव नहीं आता। उनका मूल्य बिना बदले आईफ़ोन में मूर्त हो जाता है।

परिवर्ती पूंजी

उत्पादन प्रक्रिया की शुरूआत में पूंजीपति निम्नलिखित प्रकार के निवेश करता है:

1. मज़दूरों की मज़दूरी।

2. गैर-इंसानी सामानों पर होने वाले खर्चे। जैसे कि औज़ार, मशीनरी, ईमारतें, ऊर्जा इत्यादि।

गैर-इंसानी सामानों पर हुए सारे खर्चों को स्थिर पूंजी के नाम से जाना जाता है। इसकी व्याख्या पहले की जा चुकी है।

मज़दूरी और वेतन पर होने वाले खर्चे को परिवर्ती पूंजी कहते हैं। अपनी गणना को आसान बनाने के लिए हम ये मान लेते हैं कि सारे मज़दूर मार्क्सवादी मायने में उत्पादक हैं (ये उत्पादक मज़दूर बेशी मूल्य का उत्पादन करते हैं।
ये व्यापार में संलग्न बेशी मूल्य के विभाजन को अंजाम देने

वाले अनुत्पादक मज़दूरों से अलग हैं)।

पूंजीवादी व्यवस्था में लोग दो मायनों में 'आज़ाद' होते हैं। वो दासता से आज़ाद होते हैं और भूखों मरने के लिए भी आज़ाद होते हैं। दासता और पेट भरने के साधनों, दोनो से आज़ादी की वजह से लोगों को पूंजी (ज़मीन या पैसे) के मालिकों को अपनी श्रम क्षमता को बेचने पर विवश होना पड़ता है। इंसान खुद को नहीं बेचता (चूँकि वो दासता से आज़ाद होता है), बल्कि मज़दूरी के बदले में अपनी श्रम क्षमता को बेचता है। मज़दूरी में मिलने वाले पैसे का मूल्य इतना ही होता है जिससे कि वो अपनी उपभोग की ज़रूरतों को पूरा कर सके।

मार्क्स ने श्रम क्षमता को एक **अनूठा पण्य**(Peculiar Commodity) कहा। बाकी सारे पण्यों की तरह ही इसके भी दो पक्ष होने चाहिए- मूल्य तथा उपयोग मूल्य। मज़दूरों को मिलने वाली मज़दूरी, श्रम क्षमता का विनिमय मूल्य (Exchange Value) है, जबकि श्रम, श्रम क्षमता का उपयोग मूल्य है। बेशी मूल्य और उसके उत्पादन को मार्क्सवादी नज़रिए से समझने के लिए श्रम क्षमता के विनिमय मूल्य और उपयोग मूल्य के बीच के फ़र्क को समझना ज़रूरी है।

परिवर्ती पूंजी

स्थिर पूंजी

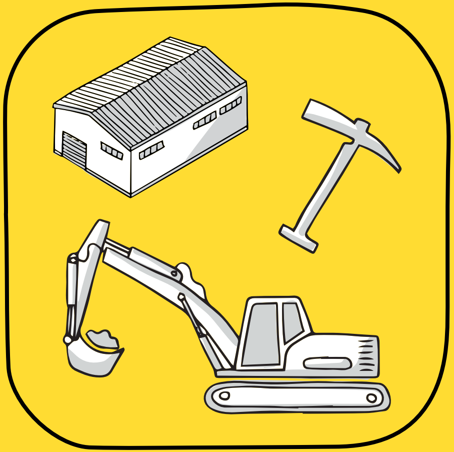

काम के एक दिन के दौरान मज़दूर अपनी श्रम क्षमता को श्रम के काम में बदलते हैं। उनके विभिन्न कौशलों का उपयोग करके कच्चे माल और मशीनों को पण्यों में बदला जाता है।

एक कार्यदिवस के दौरान, और व्याप्त कार्य परिस्थितियों में, काम करके मज़दूर जो मूल्य पैदा करते हैं वो उनके खुद के उपभोग और पुनरूत्पादन की ज़रूरतों से काफ़ी ज़्यादा होता है। उपभोग और पुनरूत्पादन की ज़रूरतों के लिए आवश्यक मूल्य उनको मज़दूरी के रूप में मिलता है जो उनके द्वारा एक दिन में काम करके पैदा किए हुए मूल्य का एक हिस्सा मात्र होता है।

मज़दूरी के रूप में जो मूल्य मिलता है, मज़दूर उससे ज़्यादा मूल्य का उत्पादन करते हैं। इस ज़्यादा मूल्य को बेशी मूल्य कहते हैं। श्रम का प्रबंधन बदलकर या मशीनों के काम करने की गति को बदलकर एक दिन में होने वाले उत्पादन को घटाया या बढ़ाया जा सकता है। इसका मतलब ये है कि बेशी मूल्य को भी घटाया-बढ़ाया जा सकता है।

श्रम क्षमता नाम के इस अनूठे पण्य की खुद के पुनरूत्पादन के लिए ज़रूरी मूल्य से ज़्यादा मात्रा में मूल्य पैदा करने की क्षमता ही इसे परिवर्ती पूंजी बनाती है।

बेशी मूल्य

मज़दूरों के श्रम के बिना कच्चा माल, मशीनें और बिजली जैसी सारी चीजें धरी की धरी रह जाएंगी। मज़दूर कच्चा माल और औज़ार लेकर उनको पण्यों में तब्दील करते हैं। उत्पादन के लिए श्रम बहुत महत्वपूर्ण है। श्रम क्षमता दूसरे पण्यों से इसलिए अलग है क्योंकि जिस श्रम क्षमता को मज़दूरों से खरीदा जाता है उसके मूल्य को पुनरूत्पादित करना पड़ता है। जब मज़दूर काम के बाद थक-हार कर घर जाते हैं तो उनको अपनी श्रम क्षमता को दुबारा बेचने के लिए उसे फिर से पैदा करना पड़ता है।

मज़दूर अपनी श्रम क्षमता को एक निश्चित रकम के बदले में बेचते हैं। पण्यों के उत्पादन के लिए जब वो काम करते हैं तो काम के दिन के एक हिस्से में ही वो इतने पण्यों का उत्पादन कर देते हैं जिससे उनकी मज़दूरी की भरपाई हो जाती है। इस समय को, जिसमें मज़दूर श्रम करके अपनी मज़दूरी के मूल्य के बराबर पण्य पैदा करते हैं, मार्क्स **आवश्यक श्रम काल**(Necessary Labour Time) कहते हैं। ये 'आवश्यक' इसलिए है क्योंकि अलग-अलग युगों में, अलग-अलग देशों में, मज़दूरों की घटी हुई मज़दूरी

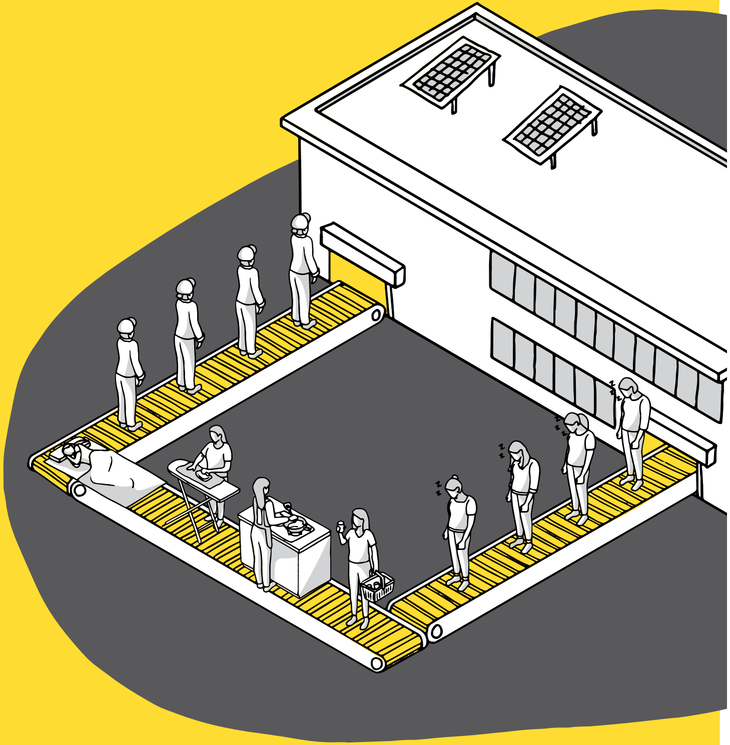

करने की क्षमता को दुबारा पैदा करने के लिए वस्तुओं और सेवाओं की अलग-अलग मात्रा की ज़रूरत होती है। कुछ देशों में जीवन-स्तर दूसरे देशों की तुलना में नीचा है। इसका मतलब, उन देशों में आवश्यक श्रम काल कम होगा। आवश्यक श्रम काल के अलावा जो काम के दिन का बचा हुआ हिस्सा है, वो **बेशी श्रम काल**(Surplus Labour Time) होता है। ये वो समयावधि है जिसमें मज़दूर अपनी मज़दूरी की भरपाई करने के लिए पर्याप्त पण्य पैदा कर लेने के बाद अतिरिक्त पण्यों का उत्पादन करते हैं।

बेशी मूल्य की दर

शोषण की दर नामक मार्क्सवादी सिद्धांत को परिवर्ती पूंजी और बेशी मूल्य का प्रयोग करके मापा जाता है। उत्पादन की प्रक्रिया में पैदा होने वाले मूल्यों का जो हिस्सा मज़दूरों को मिलता है वो परिवर्ती पूंजी होती है। दूसरी तरफ, पूंजीपतियों को मिलने वाला हिस्सा बेशी मूल्य होता है। बेशी मूल्य और परिवर्ती पूंजी के अनुपात (s/v) को **बेशी मूल्य की दर**(Rate of surplus value) कहते हैं। ये मज़दूरों के शोषण को मात्रात्मक रूप में दर्शाती है।

एक काल्पनिक पण्य का उदाहरण लेते हैं जिसका कुल मूल्य $1,000 है। स्थिर पूंजी का मूल्य $500 है। ये पूंजी - जिसमें कच्चे माल, औज़ार और ऊर्जा शामिल हैं- उत्पादन की प्रक्रिया में इस्तेमाल होती है और उत्पादन के बाद बिल्कुल अलग रूप में बाहर आती है। लेकिन इसका मूल्य जस-का-तस बना रहता है। इसके मूल्य में कोई बदलाव नहीं आता है। मज़दूरों की कमाई, यानी कि परिवर्ती पूंजी का मूल्य $250 है। बेशी मूल्य, बेशी श्रम काम में पैदा हुआ मूल्य है, जिसे पूंजीपति हड़प लेता है। इस उदाहरण में बेशी मूल्य $250 है।

शोषण की दर को s/v से, यानी कि बेशी मूल्य को स्थिर पूंजी से भाग देकर मापते हैं। इस काल्पनिक वस्तु के उदाहरण से हमें निम्नलिखित समीकरण मिलता है:

s/v= $250/$250= 100%

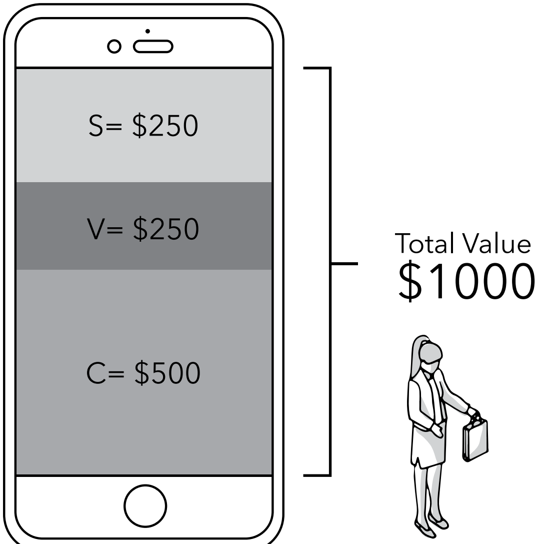

इस उदाहरण में मज़दूर के शोषण की दर 100% है। मज़दूर की हर एक डॉलर की कमाई पर पूंजीपति $1 का बेशी मूल्य हड़पता है।

अब हमारे पास वैचारिक साधन हैं जिनकी मदद से आईफ़ोन बनाने वाले मज़दूरों के शोषण की दर को मापा जा सकता है। यहाँ ये बता देना आवश्यक है कि मार्क्स के मूल्य के श्रम-सिद्धांत की गणना की कोशिश करने से पहले कुछ चीज़ों को मानकर चलना पड़ेगा ताकि वास्तविक दुनिया को सरल बनाया जा सके। हमारे विचार से, जो चीज़ें हम मानकर चलते हैं, जैसे कि कीमतें मूल्यों को दर्शाती हैं उचित ही हैं और इनसे नतीजों में बहुत ज़्यादा फ़र्क नहीं पड़ता है (शेख और टोनाक, 1994)।

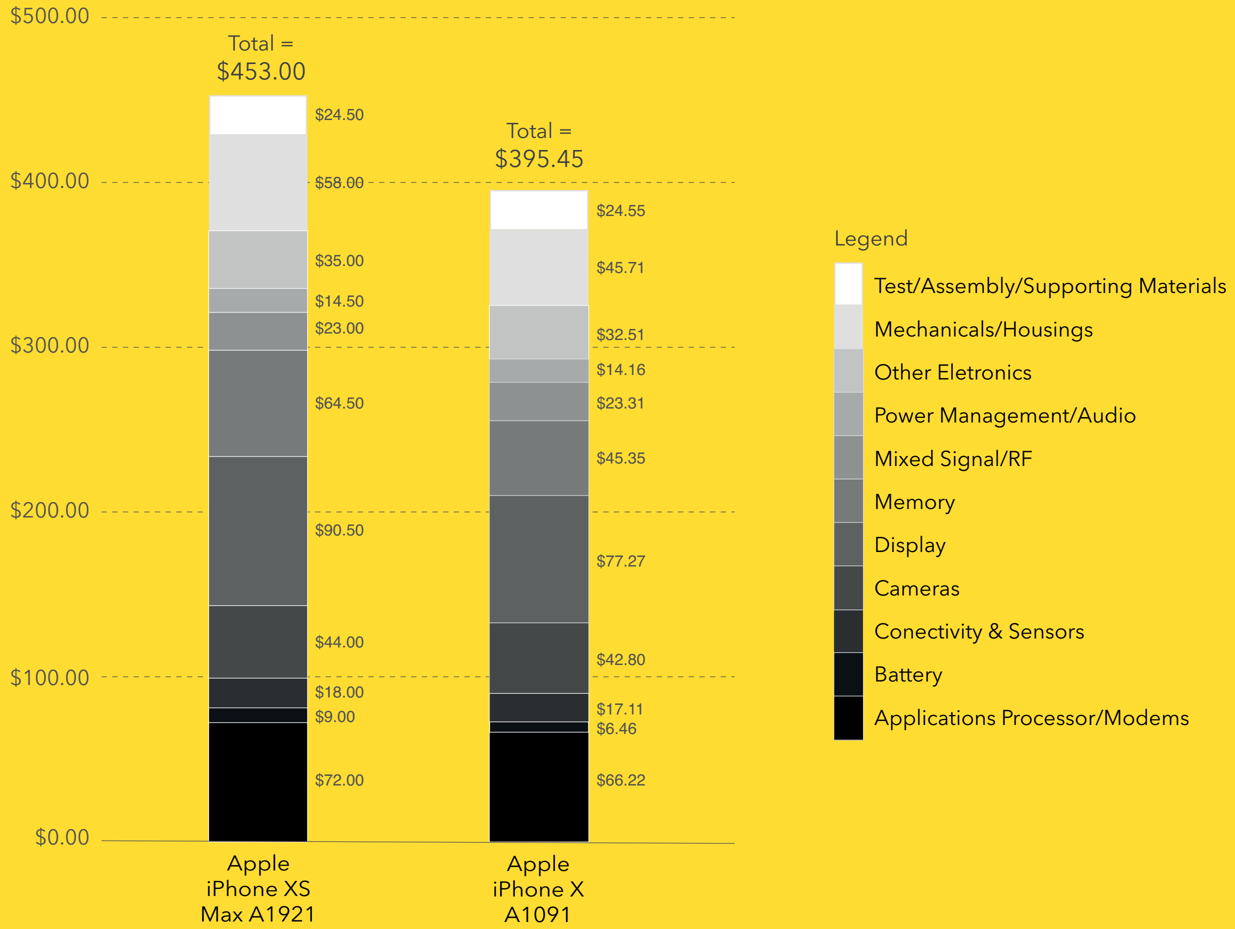

$500.00
$400.00
$300.00
$200.00
$100.00
$0.00
Total = $453.00
$24.50
$58.00
$35.00
$14.50
$23.00
$64.50
$90.50
$44.00
$18.00
$9.00
$72.00
Total = $395.45
$24.55
$45.71
$32.51
$14.16
$23.31
$45.35
$77.27
$42.80
$17.11
$6.46
$66.22
Apple iPhone XS Max A1921
Apple iPhone X A1091
Legend
Test/Assembly/Supporting Materials
Mechanicals/Housings
Other Eletronics
Power Management/Audio
Mixed Signal/RF
Memory
Display
Cameras
Conectivity & Sensors
Battery
Applications Processor/Modems

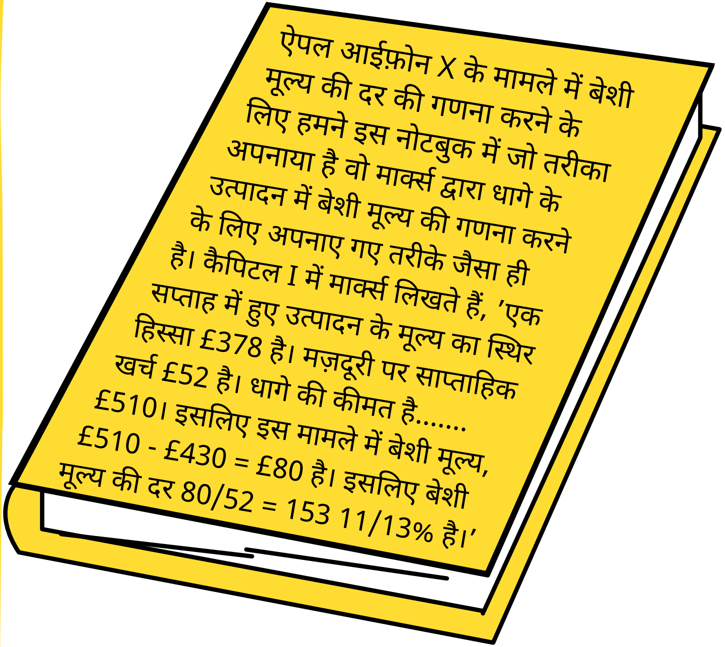

संयुक्त राज्य अमेरिका में आईफ़ोन $999 की कीमत पर बेचा जाता है। हम ये मानकर चलते हैं कि ये कीमत इस पण्य में मूर्त तकरीबन कुल मूल्य को दर्शाती है। पूंजीवादी उत्पादन की प्रक्रिया से बनाई गई किसी भी पण्य के भीतर मौजूद कुल मूल्य के तीन भाग होते हैं: स्थिर पूंजी, परिवर्ती पूंजी, और बेशी मूल्य। इसलिए हमें आईफ़ोन के कुल मूल्य में से इन भागों के हिस्से के मूल्य का आंकलन करना चाहिए।

स्थिर पूंजी. टेकइन्साइट्स के आँकड़े हमें आईफ़ोन XS मैक्स और आईफ़ोन X, दोनों के पुर्जों की कीमतों की विधिवत जानकारी देते हैं।

दोनों फ़ोनों के सारे पुर्जों की कुल कीमत क्रमश: $453 और $395.44 है। स्तंभ का पहला हिस्सा 'जाँच/पुर्जों को जोड़ना/सहायक सामग्रियों' की लागत को दर्शाता है। इससे थोड़े भ्रम की स्थिति पैदा हो जाती है। 'जाँच/पुर्जों को जोड़ना' परिवर्ती पूंजी का हिस्सा है क्योंकि ये दोनों काम करने के लिए मज़दूरों का श्रम खरीदना ज़रूरी होता है। लेकिन 'सहायक सामग्रियाँ' कच्चा माल होने की वजह से स्थिर पूंजी का हिस्सा होती हैं। सरलीकरण के लिए हम इस भाग को अपने स्थिर पूंजी के अनुमान में से घटा देते हैं। अत: इस भाग को घटाने के बाद दोनों फ़ोनों में स्थिर पूंजी $428.50 ($453- $24.50) और $370.89 ($395.44- $24.55) के बराबर होगी।

आईफ़ोन X पर ध्यान केंद्रित करते हुए हम ये मानकर चलेंगे कि स्थिर पूंजी की मात्रा $370.89 के बराबर है।

परिवर्ती पूंजी. आईफ़ोन के मूल्य के परिवर्ती हिस्से का अनुमान लगाने का काम समस्याओं से भरा पड़ा है। ऐपल अपने कामों में गोपनीयता बरतती है जिसकी वजह से वो मज़दूरी के आँकड़े प्रकाशित नहीं करती।
इसके अलावा भी दो और समस्याएँ हैं। पहली ये कि आईफ़ोन के शुरुआती शोध और डिज़ाइन पर ऐपल ने कितना खर्च किया इसकी जानकारी हमारे पास नहीं है। हमारा विश्वास है कि चूँकि शुरूआती शोध और डिज़ाइन पर हुआ खर्चा बाद में बने अलग-अलग मॉडल के आईफ़ोनों से अर्जित मुनाफ़े से हुई भरपाई के बाद नगण्य हो जाता है। इसलिए इसको नज़रअंदाज़ किया जा सकता है। अगर नए आईफ़ोनों की बात करें तो इनके लिए शुरूआती शोध और डिज़ाइन का खर्चा बेहद मामूली सा होता हैं। दूसरी समस्या ये है कि अलग-अलग देशों में अलग तरह के पुर्ज़े बनाने वाले मज़दूरों को मिलनेवाली मज़दूरी में कितना फ़र्क होता है, इससे जुड़े हुए आँकड़े हमारे पास नहीं हैं। मज़दूरों को दी जाने वाली मज़दूरी में व्याप्त फ़र्क को नज़रअन्दाज़ किया जा सकता है क्योंकि जिन जगहों पर पुर्जे बनाने वाली कम्पनियाँ मौजूद हैं वहाँ मज़दूरों को मिलने वाली मज़दूरी में ज्यादा फ़र्क नहीं पाया जाता। चूँकि हम मज़दूरी का आकलन सिर्फ़ विनिर्माण क्षेत्र में मिलने वाली मज़दूरी के आधार पर ही कर रहे हैं और उन क्षेत्रों को छोड़ रहे हैं जो कच्चे माल को निकाले जाने से जुड़े हुए हैं, हमारा मज़दूरी का ये आकलन वास्तविकता में मिलने वाली मज़दूरी से ज़्यादा ही है।

जिन चीज़ों को हम मानकर चल रहे हैं वो स्वीकार्य होनी चाहिए। क्योंकि परिवर्ती पूंजी का हमारा आकलन ($24.55) 'जाँच/पुर्जों को जोड़ना/ सहायक सामग्रियों' को ध्यान में रखकर किया गया है। 'जाँच/पुर्जों को जोड़ना/ सहायक सामग्रियों' की वजह से आईफ़ोन X के उत्पादन में लगे मज़दूरी की मात्रा का आकलन वास्तव में लगी मज़दूरी से ज़्यादा हो जाता है।

आईफ़ोन का कुल मूल्य = $999
स्थिर पूंजी = $370.89
परिवर्ती पूंजी = $24.55

बेशी मूल्य कितना है?

बेशी मूल्य = (कुल मूल्य) - (स्थिर पूंजी + परिवर्ती पूंजी)

$999 - ($370.89 + $24.55)
= $603.56

जितनी बार एक आईफ़ोन को $999 की कीमत पर बेचा जाता है,उतनी बार ऐपल को पैसों के रूप में $603.56 का बेशी मूल्य मिलता है।

शोषण की दर कितनी है?

s/v = 603.56/24.55 = 2458%

शोषण की दर 2458% है। शोषण की ये दर मार्क्स द्वारा 1867 में प्रकाशित कैपिटल में दिए गए उदाहरण के शोषण की दर से 25 गुणा ज़्यादा है। दूसरे शब्दों में, 21 वीं सदी में आईफ़ोन बनाने वाले मज़दूर 19 वीं सदी में इंगलैंड के कपड़ों के कारखानों में काम करने वाले मज़दूरों से 25 गुणा ज़्यादा शोषित हैं।

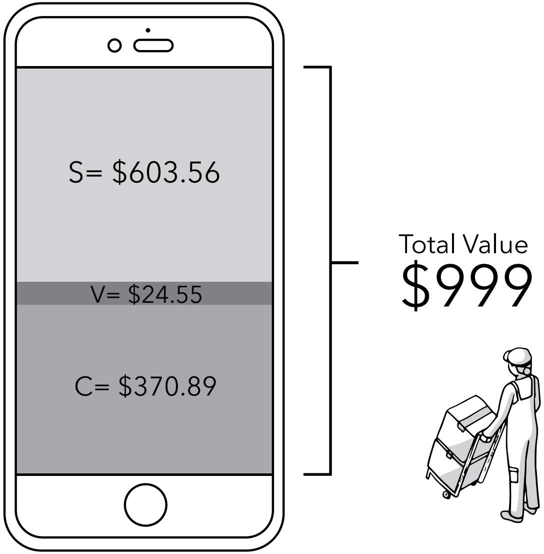

vs.

ये संख्या - 2458%- हमें क्या बताती है? ये बताती है कि मज़दूरों के दिन के काम का एक बहुत ही छोटा हिस्सा उनकी मज़दूरी के बराबर का मूल्य पैदा करने के काम आता है। दिन के काम का ज़्यादातर हिस्सा उन चीज़ों के उत्पादन में व्यय होता है जिनसे पूंजीपतियों की दौलत बढ़ती है। शोषण की दर जितनी ज़्यादा होगी, मज़दूरों की मज़दूरी से पूंजीपतियों की दौलत उतनी ही ज़्यादा बढ़ेगी।

परिशिष्ट (Appendix)

केन्नेथ एल. क्रेमर, ग्रेग लिंडेन और जेसन डेड्रिक (2011) ने आईफ़ोन 4 के पहले दर्जे के आपूर्तिकर्ताओं को मिलने वाले कुल मुनाफ़े का क्षेत्र-वार विश्लेषण किया। अपने अध्ययन में उन्होंने लागत को सामानों और मज़दूरी में बाँट दिया।

उन्होंने एक गैर-मार्क्सवादी नज़रिए से आईफ़ोन 4 के मूल्य में से बेशी मूल्य (कुल मुनाफ़ा), स्थिर पूंजी(सामान), और परिवर्ती पूंजी(मज़दूरी) के हिस्सों का अंदाज़ा लगाना चाहा। इस चार्ट में मौजूद आँकड़ों के आधार पर हम आईफ़ोन 4 के शोषण की दर का मोटे तौर पर एक अनुमान लगा सकते हैं।

- आईफ़ोन 4 के कुल मूल्य में बेशी मूल्य का हिस्सा तकरीबन 73% है। (ऐपल के मुनाफ़े + संयुक्त राज्य अमेरिका में ऐपल के अतिरिक्त आने वाले अन्य मुनाफ़े + यूरोपीय संघ के मुनाफ़े + ताईवान के मुनाफ़े + जापान के मुनाफ़े+ दक्षिणी कोरीया के मुनाफ़े + अन्य मुनाफ़े)
- कुल मूल्य में उत्पादन के सामानों की कुल लागत का हिस्सा 21.9% है।

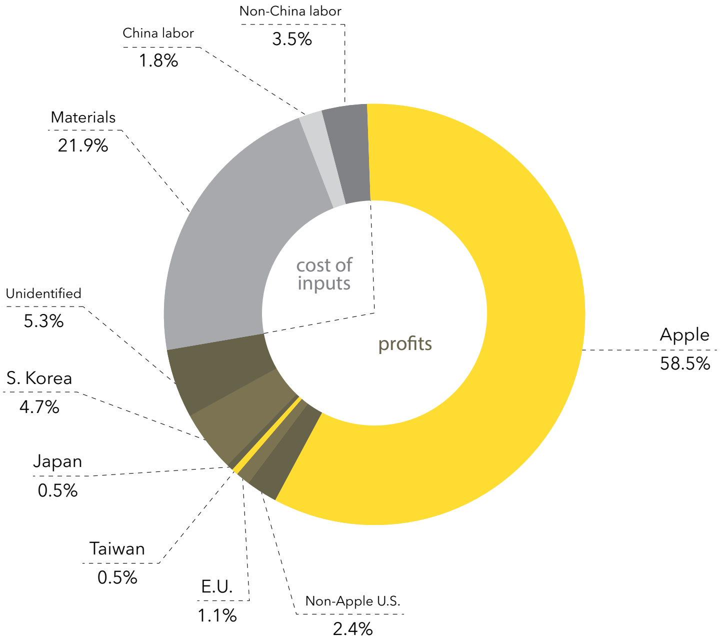

- मज़दूरी पर आई लागत का हिस्सा 5.3% है जिसमें चीन को छोड़कर बाकी जगहों का हिस्सा 3.5% है। अगर ये माना जाए कि गैर-चीनी मज़दूरी की लागत का एक बड़ा हिस्सा प्रबंधन और पर्यवेक्षण का काम करने वाले कर्मचारियों (अनुत्पादक मज़दूर, जिनके वेतन को बेशी मूल्य में से दिया जाता है) के वेतन के रूप में जाता है, तो सही रूप में गैर-चीनी मज़दूरी की लागत का सिर्फ़ 1.5% हिस्सा ही परिवर्ती पूंजी है। कुल परिवर्ती पूंजी चीनी मज़दूरी के हिस्से (1.8%) और गैर-चीनी उत्पादक मज़दूरी के हिस्से (1.5%) को जोड़कर बनती है। इसलिए, आईफ़ोन 4 के कुल मूल्य में कुल परिवर्ती पूंजी का हिस्सा मात्र 3.3% है।
- इन आँकड़ों के अनुसार, आईफ़ोन 4 के शोषण की दर 75/3.3 = 2273% है।

ये नोटबुक हमारे अर्थशास्त्री ई. एहमत टोनाक के एक विश्लेषण पर आधारित है। उनके इस विश्लेषण का एक पूर्ववर्ती संस्करण 'iPhone 6'daki sömürü oranı?' (Sendika.org, 30 November 2014) के नाम से आ चुका है।

References

- Anwar M. Shaikh and E. Ahmet Tonak, Measuring the Wealth of Nations The Political Economy of National Accounts, Cambridge: Cambridge University Press, 1994.
- Baruch Gottlieb, A Political Economy of the Smallest Things, New York: ATROPOS Press, 2016.
- Brian Merchant, The One Device: The Secret History of the iPhone, New York: Little, Brown and Company, 2017.
- Kenneth L. Kraemer, Greg Linden and Jason Dedrick, 'Capturing Value in Global Networks: Apple's iPad and iPhone', July 2011.
- Karl Marx, Capital, volume 1, New Delhi: LeftWord Books, 2014.
- Fun Ngai and Jenny Chan, 'Global Capital, the State, and Chinese Workers: The Foxconn Experience', Modern China, vol. 38, no. 4, 2012.
- Tricontinental: Institute for Social Research, In the Ruins of the Present, Working Document no. 1, 2018.

tricontinental

Tricontinental: Institute for Social Research is an international, movement-driven institution focused on stimulating intellectual debate that serves people's aspirations.
www.thetricontinental.org

Instituto Tricontinental de Investigación Social es una institución promovida por los movimientos, dedicada a estimular el debate intelectual al servicio de las aspiraciones del pueblo.
www.eltricontinental.org

Instituto Tricontinental de Pesquisa Social é uma instituição internacional, organizado por movimentos, com foco em estimular o debate intelectual para o serviço das aspirações do povo.